राज
कॉमिक्स
संख्या 0079
रोमन हत्यारा
सुपरकमांडो
ध्रुव
मुफ्त
ध्रुव का
एक पोस्टर
Vijay Kadam

रोमन हत्यारा

कथा व चित्रांकन : अनुपम सिन्हा • सम्पादक : मनीष चन्द्र गुप्त

बात बहुत पुरानी है। ईसा से 326 वर्ष पूर्व यानि आज से 2314 वर्ष पहले की।...

...जब सिकंदर और पोरस का प्रसिद्ध ऐतिहासिक युद्ध अपनी चरम सीमा पर था। पोरस का रणकौशल सिकंदर की सेना पर भारी पड़ रहा था। क्योंकि पोरस ने इस युद्ध में हाथियों का उपयोग किया था और इस कारण यूनानी सैनिकों को पीछे हटना पड़ा था।

इतिहास में ऐसा कहीं भी लिखा नहीं मिलता, परंतु ऐसा कहा जाता है कि उस वक्त सिकंदर ने एक ऐसे खतरनाक साधन का प्रयोग किया, जिसका कोई काट नहीं था और जो अकेले ही हारी बाज़ी को जीत में बदल सकता था...

...और यह खतरनाक साधन था एक रहस्यमय रोमन सैनिक, जिसमें असीम शक्ति थी! गज़ब की ताकत!

और कहते हैं कि उसकी ताकत का स्रोत था उसका टोप, जो किसी सूफी ने उसको उपहार-स्वरूप दिया था!

इतिहास गवाह है कि पोरस की हार उसके हाथियों के भड़कने के कारण हुई।
और उन हाथियों के भड़कने का कारण था वह रहस्यमय सैनिक - और उसका रहस्यमय टोप...

... और जहाँ तक मेरा ख्याल है, यही वह टोप है! समझे?
वाह! यह तो हमारे म्यूज़ियम की सबसे नायाब चीज होगी!
इसको तो म्यूज़ियम मैं ही पहुँचाऊंगा!
मेरे अलावा और कोई इसको म्यूज़ियम तक नहीं ले जा पाएगा!
इनको हवा भी नहीं लगेगी कि यह टोप कब और कैसे म्यूज़ियम पहुँच गया!
जी हाँ! सिंधु घाटी के खंडहरों में खड़े यह चारों व्यक्ति कुंदनपुर म्यूजियम के डिप्टी-डायरेक्टर हैं। बाएं से, तिवारी जी, श्रीवास्तव बाबू, खान साहब और मि० डिसूज़ा। और चारों यह जानते हैं कि जो भी यह टोप म्यूज़ियम तक पहुँचाएगा, मेयर साहब अगला म्यूजियम-डायरेक्टर उसी को बनाएंगे!

और इस प्रकार वह कहानी प्रारंभ हुई जिसने पूरे कुंदनपुर को हिला कर रख दिया। शुरुआत तिवारी जी ने करी।
जहाँ तक मेरा ख्याल है, इस रोमन टोप की सुरक्षा ज़रूरी है!
वरना इसके साथ ही मेरा डायरेक्टर बनने का चान्स भी उड़न-छू हो जाएगा!

वैसे भी मुझको बाकी तीनों की नीयत पर शक है!
लेकिन अब कोई फिक्र नहीं!
अब यह फंदा मेरे रोमन-टोप की रखवाली करेगा!

आऽऽऽओ! अब मैं चैन की नींद सो सकूंगा!
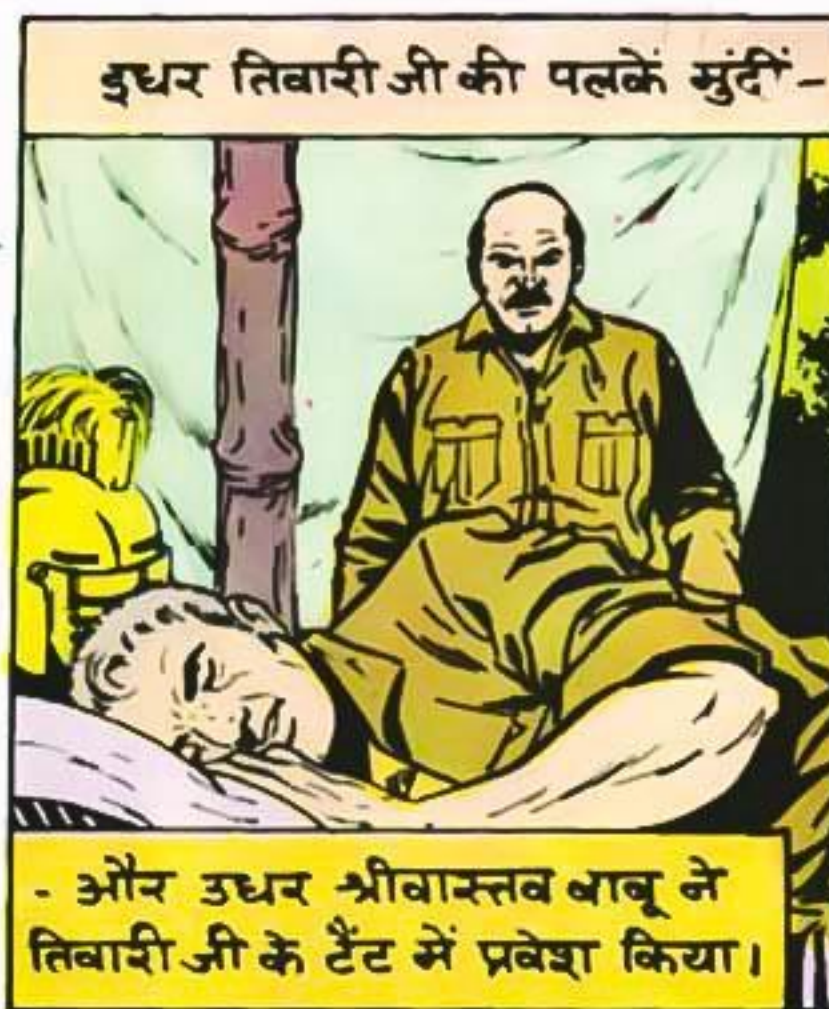
इधर तिवारी जी की पलकें मुंदीं-
- और उधर श्रीवास्तव बाबू ने तिवारी जी के टैंट में प्रवेश किया।

वाह! इतनी आसानी से काम हो गया!

हा..हा..हा! अब यह रोमन टोप मेरा है!
इससे पहले कि कोई जगे...

...मैं रातों-रात रफूचक्कर... आह!!
पर खान साहब भी घात लगाए बैठे थे।
तड़

और अब रोमन टोप खान साहब के हाथ में था –
रफूचक्कर होगा!? अरे अब अपनी खोपड़ी को रफू कराता फिरेगा श्रीवास्तव! हा..हा..हा...

हा.. हाऽऽऽ!! यह क्या ?

बड़ी जल्दी में थे, खान साहब! कहीं जा रहे थे क्या ?
क.. कहीं नहीं, डिसूज़ा भईया! अरे, मुझे जल्दी से बाहर निकालो!
कहीं किसी सांप-वांप ने काट लिया तो मेरी यहीं पर कब्र बन जाएगी!

अरे, मेरे तुम्हारे दुश्मन!
ऐसा करो, तुम यह टोप ऊपर फेंको! बदले में मैं एक रस्सी नीचे फेंक दूंगा! बस!

तो ये ले कम्बख्त! पकड़!
हा...हा! धन्यवाद, खान साहब!

अब तो कुंदनपुर में ही मुलाकात होगी! बाय-बाय!

अरे, धोखेबाज़, रस्सी तो फेंकता जा! ...
हा हा हा! रस्सी होती तो...

नगर मेयर द्वारा
श्री एम॰ तिवारी
म्युज़ियम डाय-
रेक्टर नियुक्त

अगले दिन - आई० जी० राजन के बंगले के लॉन में -
पीटर मैसी! 1982 का राष्ट्रीय वीरता पुरस्कार! पांच सशस्त्र डकैतों को अकेले ही सिर्फ़ ईंटें फेंक-फेंककर मार भगाया!
रेणु! 1983 की राष्ट्रीय वीरता पुरस्कार विजेता! बाढ़ से दस व्यक्तियों की जान बचाई! राष्ट्रीय जूनियर निशानेबाज़ी चैंपियन!

करीम शाह! 1981 का राष्ट्रीय वीरता पुरस्कार! नशीले पदार्थों के सात तस्करों को गिरफ़्तार कराया!

और... अरे! यह चौथा कौन आ गया?
इसमें तो सिर्फ़ तीन...
श्वेता मेहरा! 1984 में
को अकेले ही
मार डाला और---

मम्मी! बचाओ!!
ठहर तो, बंदरिया! अभी बताता हूं!
हा हा हा! डरपोक कहीं की!

हां, कमांडो पीटर, रेणु और करीम! तुम तीनों की ट्रेनिंग कल से शुरू होगी! अब तुम तीनों गेस्ट-हाऊस जाकर आराम करो!
थैंक्स कैप्टेन!

उसी वक्त - कुंदनपुर के तीन अलग-अलग हिस्सों में - नफ़रत का सागर उफ़ान भर रहा था।

और उसी रात - जब घड़ी की सुईयां एक बजने का इशारा कर रही थीं, कुंदनपुर म्यूज़ियम में एक छाया व्यस्त थी।

ये रही एक रोमन पोशाक! इससे इफेक्ट और ज़ोरदार आएगा!

... और ये रहा मेरा प्यारा रोमन टोप! ही ही!
दो हाथ टोप उठाने के लिए बढ़े-

परंतु रोमन टोप छूते ही एक अलार्म बज उठा।
यह क्या !?

पलक झपकते ही सतर्क म्यूज़ियम गार्ड कमरे की तरफ़ भागे।
कमरा अंदर से बंद है!
दरवाज़ा तोड़ दो!

परंतु कमरे में घुसते ही वे एक क्षण के लिए हक्के-बक्के रह गए।
?
?
एक आश्चर्यजनक दृश्य उन की आंखों के सामने था।

रोमन सैनिक बने उस व्यक्ति ने इसका पूरा फ़ायदा उठाया।

आह ! इतनी ताक़त ! यकीन नहीं होता !

रोमन सैनिक ने म्यूज़ियम में तबाही मचा दी।

म्यूज़ियम का मजबूत मुख्य द्वार भी रोमन सैनिक की ताक़त के आगे बेबस था।
तड़ाक़

वह सड़क पर आकर एक क्षण को रुका।
सामने से एक कार आ रही थी।

य... यह क्या है?
यह तो मुझे रुकने का इशारा कर रहा है !...
...पर रुकूंगा तो ये मुझको मार डालेगा !

ड्राइवर का पैर एक्सीलेटर पर दबने लगा।
स्पीडोमीटर की सुई उछलकर नब्बे पर थिरकने लगी।

लेकिन फिर भी-कार एक झटके से रुक गई।
धप्पप

अगले ही पल कार का ड्राइवर उछलकर बाहर आ गिरा।

कार एक झटके से आगे बढ़ी और अंधेरे में गुम हो गई।

थोड़ी ही देर बाद पूरी सड़क पुलिस की गाड़ियों से भरी थी।

सुबह -
... और म्यूज़ियम के डायरेक्टर श्री तिवारी का दावा है कि उस रोमन टोप को पहनने वाले में आश्चर्यजनक ताक़त आ जाती है!
चट
हुंह! ये अंधविश्वासी तो...
अरे जाओ! अगर उससे भिड़ंत हो गई तो देखूंगी कि कौन बचाने आता है!
तुम लटकती हुई आ जाना, बंदरिया!
मम्मी! भईया ने मुझे फिर बंदरिया कहा!
ठीक कहा!

दिन ढला, शाम ढली और रात गहराने लगी।
शहर की सबसे ऊंची इमारत 'चैपेल' की...

पच्चीसवीं मंजिल से चारों तरफ़ अंधेरे का ही साम्राज्य नज़र आ रहा था।

हा हा! मुझे तो हंसी आ रही है! देश के सबसे बड़े म्यूज़ियम के डायरेक्टर तिवारी जी पत्ते की तरह थर-थर कांप रहे हैं!
तुम नहीं जानते जैकब! उस टोप को पहनने से असीमित ताक़त आ जाती है!...

...और फिर उस रोमन सैनिक के लिए कोई काम असंभव नहीं रहता!

शहर की सबसे ऊंची इमारत से अब हम आप को शहर के बाहर के सैनिक छावनी क्षेत्र में ले चलते है। जहां एक हवाई-पट्टी पर खड़े कुछ लड़ाकू विमानों पर एक सैनिक पहरा दे रहा है।
सब कुछ एकदम सामान्य और शांत है।

परंतु एकदम से दृश्य बदल जाता है।
एक भयावह आकृति ने अंधेरे से प्रगट होकर पहरेदार को दबोच लिया है।
म्म्म
दो मिनट की छटपटाहट के बाद पहरेदार का शरीर ठंडा और शांत पड़ गया।...

...और रोमन सैनिक किनारे खड़े एक लड़ाकू विमान की ओर बढ़ चला।

अरे! इस वक्त कौन पायलट प्लेन उड़ा रहा है?
हैलो! हैलो ९८५०।११T! अपनी पहचान दो!
वरना हम तुम्हें मार गिराएंगे!
परंतु उधर से कोई जवाब नहीं आया।

शीघ्र ही दो अन्य लड़ाकू विमान उस चोरी किए गए विमान के पीछे उड़ चले।

और उधर-
'चैपेल' की छत पर -
समझने की कोशिश करो, जैकब! मुझे पूरा यकीन है कि वह टोप मुझे ही मारने के लिए चुराया गया है!...
...और यह काम या तो श्रीवास्तव का है या स्वान का और या फिर... डिसूज़ा का!
फिर भी तुम चिंता मत करो, तिवारी!...

...मैं अपने सबसे प्यारे दोस्त को कभी मरने नहीं दूंगा! यह इमारत मेरी है; यह इलाक़ा मेरा है! चप्पे-चप्पे पर मेरे आदमी बंदूकें लिए तैनात हैं...

...अब तुम्हारा 'रोमन हत्यारा' तुम तक या तो मर कर पहुंच सकता है...

... या उड़ कर!?

यह लड़ाकू हवाई-जहाज इतनी रात गए यहां क्या कर रहा है?

गोली चलाओ इस पर!
गोलियों की बौछार शुरू हो गई।
धाँय
लेकिन हवाई-जहाज पर खरोंच तक नहीं आई।

जवाब में लड़ाकू यान पलटा।
उसकी तोपों का मुंह इमारत की तरफ़ मुड़ा...
धड़ाम
...और इमारत की छत के परखच्चे उड़ गए।
तिवारी जी लिफ़्ट की तरफ़ भागे।

तोपें एक बार फिर गरजीं...
...और तिवारी के चिथड़े चारों तरफ़ बिखर गए।

पीछा करने वाले लड़ाकू यान अब दूर नहीं थे।
तुम ने देखा, राकेश?
हां, अब और कोई चारा नहीं है!

हमको इस विमान को नष्ट करना ही पड़ेगा!
इसे समुद्र की तरफ़ खदेड़ो!
वह खुद ही समुद्र की तरफ़ जा रहा है!

चलो! इसने हमारा काम खुद ही आसान कर दिया! वरना इसके जलते हुए टुकड़े शहर में गिरते!
बूम
कड़ड़ड़ड़ड़
दोनों लड़ाकू विमानों की तोपें लगभग एकसाथ गरजीं -

निशाना सच्चा था।
जलता हुआ विमान तेज़ी से पानी की तरफ़ गिरने लगा।

लेकिन रात के अंधेरे में किसी ने भी 'रोमन सैनिक' को सकुशल बाहर निकलते नहीं देखा।

विमान के टुकड़े धीरे-धीरे समुद्र-तल की तरफ बढ़ने लगे।
और एक रहस्यमय आकृति समुद्र की सतह की तरफ

पीछा कर रहे दोनों विमानों ने एक चक्कर काटा और फिर वे भी तेजी से अंधेरे में गुम हो गए।
हा, हा! एक गया, दो बाकी!

अगले दिन–
मैं अब भी कहता हूं आई॰ जी॰ साहब कि वह 'रोमन-हत्यारा' मरा नहीं! वह ऐसे मामूली हादसे में मर ही नहीं सकता!
मामूली!? आप ऐसे एक्सीडेंट को मामूली कह रहे हैं?
ख़ैर, मि॰ डिसूजा! मैं कोई ठोस खबर मिलने तक आपको एक अंगरक्षक दे सकता हूँ!...
...आप यही चाहते हैं न?
जी हां, आई॰ जी॰ साहब! मैं जानता था कि आप मेरी जान खतरे में नहीं पड़ने देंगे! वैसे... मेरा अंगरक्षक होगा कौन?
उसका नाम है...
...सुपर कमांडो ध्रुव!

और थोड़ी देर बाद जब डिसूज़ा पुलिस-हैडक्वार्टर से बाहर निकला तो उसके चेहरे पर निश्चिंतता तैर रही थी।

आधे घंटे बाद उसकी कार शहर के बाहर बीहड़ों के बीच बने एक केबिन की तरफ़ बढ़ रही थी।
जब तक यह खतरा टल न जाए, तब तक यह केबिन मेरा नया घर होगा!

यहा पर मुझको कोई नहीं ढूंढ पाएगा! वाह! हा हा !!
डिसूजा तेज़ी से कार से उतरा।

और उसने केबिन का दरवाज़ा खोला।
आइए, डिसूज़ा साहब!
क...कौन हो तुम? अंदर कैसे आए?

मेरा नाम ध्रुव है, मि० डिसूज़ा! सुपर कमांडो ध्रुव!...
...आई० जी० साहब ने मुझको आपकी सुरक्षा के लिए नियुक्त किया है!

तुम को? ...हाहाहा! तुम मेरी रक्षा करोगे!? अरे, तुम्हारे जैसे बच्चे की रक्षा तो उलटे मुझ को करनी पड़ेगी!
मैं आपकी शंकाओं का कारण समझ रहा हूं, मि० डिसूजा!...
...लेकिन आप निश्चिंत रहिए!
वक्त आने पर मैं आपको धोखा नहीं दूंगा!

हुंह! छोटा मुंह और बड़ी बात! खैर, मैंने ऐसे ही वक्त के लिए यह 'रिवॉल्वर' संभाल कर रखा था!
बहुत खूब! पर इसकी जरूरत आपको नहीं पड़ेगी!...
...मेरे रहते!

...लेकिन एक बात तो बताइए! आपके अलावा श्रीवास्तव बाबू और खान साहब पुलिस के पास क्यों नहीं आए?
क्योंकि या तो वे बहुत चालाक हैं या फिर बहुत बेवकूफ!...
...और उन दोनों में से एक तो खुद ही 'रोमन हत्यारा' है!
उसको क्या फ़िक्र?

ओह! आ.. आ गया! अब मैं नहीं बचूंगा! नहीं...

छनाक

'रोमन-सैनिक' का हाथ बिजली की सी तेज़ी से घूमा -

चटाक

और ध्रुव उछलकर दूर जा गिरा।

परंतु इससे पहले कि रिवॉल्वर चल पाता, ध्रुव एक बार फिर रोमन-सैनिक पर टूट पड़ा।

लेकिन-
आह! यह तो मुझे ऐसे मार रहा है, मानो मक्खी उड़ा रहा हो!...
य... यह लड़का मुझे नहीं बचा पाएगा
डिसूज़ा का रिवॉल्वर दोबारा उठा-

नहीं! गोली मत चलाना!
भय से कांप रहे डिसूज़ा ने कुछ नहीं सुना।

उसका रिवॉल्वर एक के बाद एक गोलियां उगलने लगा।
पूरा केबिन धुएं से भर गया।

पर जब धुआं हटा तो-
य... यह क्या!? इसपर तो गोलियों का भी कोई असर नहीं!

डिसूज़ा बाहर की तरफ भागा।
रोमन-सैनिक भी उसके पीछे लपका-
लेकिन ध्रुव के कारण उसको फिर रुक जाना पड़ा।

इस बार उसने ध्रुव पर अपने शिकार के भागने का गुस्सा उतारना शुरू कर दिया।

ध्रुव को वार करने का कोई मौका नहीं मिला।

वह किसी प्रकार ताक़त बटोर कर उठ खड़ा हुआ।

लेकिन तभी एक चमचमाती दुधारी तलवार उसकी गर्दन पर आ लगी...
...और अंदर घुसने लगी।

ध्रुव के गले से खून की एक पतली धार नीचे की तरफ़ रेंगने लगी।
आह! अगर इस वक्त कुछ न किया...

ध्रुव ने पूरा ज़ोर लगाया-
और लकड़ी में गड़ा कीला बाहर आ गया।
सट्

अगले ही पल ध्रुव का हाथ तेज़ी से घूमा और –
आह!

इस समय भागने में ही समझदारी है!
?

पीछे देखकर भाग रहे ध्रुव का पैर पेड़ की एक उभरी जड़ में फंसा -

वह झटके से नीचे गिरा
और उसकी आंखों के आगे धीरे-धीरे अंधेरा छाने लगा।
कड़ाक्

पास आती पदचापों को ध्रुव सुन नहीं पाया।
ठक्

क्योंकि वह बेहोश हो चुका था।

हा हा हा!!

'रोमन-सैनिक' पलटा और अपने असली शिकार की खोज में बढ़ चला।

पता नहीं कितनी देर बाद - ध्रुव को धीरे-धीरे होश आना शुरू हुआ।

अरे! डिसूज़ा जी कहां गए?
कहीं वे उस 'रोमन-हत्यारे' के चंगुल में... नहीं, नहीं! ऐसा नहीं हो सकता!
वह तेज़ी से कॉटेज की तरफ़ भागा।

कॉटेज तो ख़ाली है!
लेकिन यह ज़मीन पर क्या पड़ा है?

यह तो उस गोली का खोल है, जो डिसूज़ा ने 'शेमन-सैनिक' पर चलाई थी! लेकिन यह तो ...
ओह!
अब कुछ-कुछ समझ में आ रहा है!

वह तेजी से बाहर निकला-
और अपनी स्पेशल मोटर-साईकल पर शहर की तरफ़ रवाना हो गया।

और फिर शहर के एक फ्लैट में-
हेलो! ब्लू बैग?
मैं 'रेड-रोज़' बोल रहा हूं!... गड़बड़ हो गई! डिसूज़ा बचकर भाग निकला, बॉस!
क्या!?

खैर, जो होना था हो गया! लेकिन अगर तुमने अपनी जुबान खोली तो हमेशा के लिए ख़ामोश कर दिए जाओगे!
क... कभी नहीं!

वाह! क्या प्यार भरी बातें हो रही थीं!

तु... तुम!!
तुम यहां कैसे? क... क्या चाहते हो तुम मुझसे?

उस केबिन में सिर्फ तीन लोगों की उंगलियों के निशान थे! डिसूज़ा, मेरे और 'रोमन-सैनिक के!...
...पुलिस-रिकॉर्ड से यह पता करना क़तई मुश्किल नहीं था कि वे तीसरी उंगलियों के निशान किसके हैं!

वे निशान तुम्हारे थे! तुम्हारे; यानि अपने ज़माने के मशहूर दादा रंगा-शाह के!
त...तो अब तुम मुझसे क्या चाहते हो?
तुम्हारे बॉस का नाम और 'रोमन-टोप' का पता!

मुझे नहीं पता कि वह कौन है! खुदा क़सम!
झूठ!
तड़

मत मारो! मैं सच कह रहा हूं कि मुझे नहीं मालूम!...

...बात परसों की है! मैं इसी कमरे में बैठा सोच में डूबा था कि मेरी बेटी के निक़ाह के लिए पैसे कहां से आएंगे!...

...कि तभी-न जाने कहा से एक अजीब आकृति मेरे सामने आकर खड़ी हो गई...
क...कौन हो तुम? क्या चाहते हो?

...लेकिन उसने बिना कुछ बोले मुझे मारना शुरू कर दिया।
उसका एक-एक हाथ सौ-सौ किलो के हथौड़े की तरह पड़ रहा था।
तड़

इस चिट्ठी के साथ रखी टोपी
पोशाक को पहनकर तुम परसों
संतपुरा के बीहड़ों में जाओगे। यहाँ
तुमको एक केबिन में डिसूज़ा नाम
आदमी मिलेगा। तुमको उसका खून
करना है। डिसूज़ा की फ़ोटो और रास्ते
का नक्शा इस चिट्ठी के साथ लगा है
डरना मत! इस 'टोप' को पहनने से तुम
में अद्भुत ताक़त आ जाएगी। क़त्ल करने
पोशाक और टोप वहीं छोड़
। पैसा तुम्हारे पास
धोखा

जैसे ही मैं अपने फ्लैट में घुसा, मेरे सर पर पीछे से एक जोरदार वार हुआ...

...और जब मुझको होश आया तो न तो वहां कोई पोशाक या टोप था और न ही कोई पैसा!
हूं! शायद तुम सच बोल रहे हो! पर इतना काम तो तुम्हारा 'ब्लू बैग' खुद भी कर सकता था!

सवाल यह है कि उसने तुमको क्यों भेजा?

और उसी वक्त-श्रीवास्तव बाबू के घर में -
हैलो! हां!... खान!? तुम कहा से बोल रहे हो?

मैं 'पर्ल-हार्बर' पर समुद्र में खड़ी एक मोटर बोट से बोल रहा हूं!...हां!

तुम तुरंत 'पर्ल-हार्बर' आ जाओ!
मुझे तुमसे बहुत जरूरी बात करनी है! 'रोमन-टोप' के विषय में!
ही ही! बॉस ये सुन कर कितना खुश होगा!

अभी आता हूं, प्यारे खान!
अभी आता हूं!

एक तरफ़ ध्रुव अपनी मोटर-साईकल पर पूरे शहर में लापता डिसूज़ा को ढूंढ़ रहा था।

और दूसरी तरफ श्रीवास्तव बाबू अपनी कार में 'पर्ल हार्बर' की तरफ़ बढ़ रहे थे।
पर्ल हार्बर
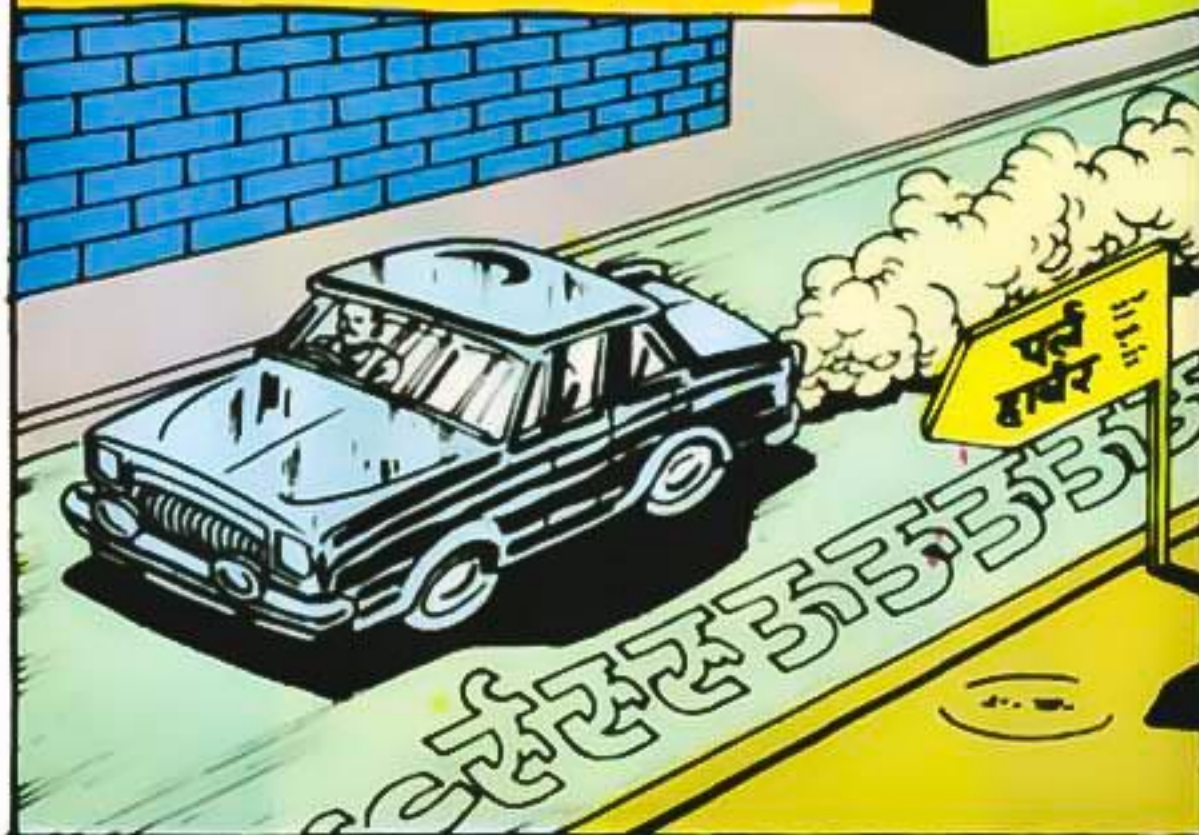
खान साहब को भी बेसब्री से इंतज़ार था-
यहां से मुझको दूर-दूर तक दिखाई दे रहा है!
आज वह श्रीवास्तव का बच्चा नहीं बचेगा!

तिवारी मर चुका है, डिसूज़ा पर हमला हो चुका है, मैं रोमन सैनिक नहीं हूं!
अब सिर्फ़ वह कमीना श्रीवास्तव ही रोमन-सैनिक हो सकता है!
आज मैं इस पाप को दुनिया से हमेशा के लिए खत्म कर दूंगा!

हमेशा के लि...लि...

तु... तुम आ गए! अब तुम नहीं बचोगे, श्रीवास्तव!
जवाब में 'रोमन-सैनिक' धीरे से हंसा।-
हा हा हा!

- और उसने अपना पैर कस कर मोटरबोट पर पटका।
धम्मम

पूरी मोटर-बोट एक तरफ़ झुक गई।

खान साहब संतुलन खोकर डेक पर आ गिरे
पिस्तौल उनके हाथ से छूटकर पानी में जा गिरा।

अब खान साहब बेबस थे।
मु...मुझे माफ़ कर दो, श्रीवास्तव! मैं मैं तो म...मजाक कर...

'रोमन-हत्यारे' ने सब अनसुना करते हुए खान साहब के पैर पकड़कर उनका सिर पानी में डुबा दिया।

थोड़ी देर छटपटाने के बाद खान साहब का बदन ठंडा और शांत हो गया।

हा...हा! यह भी गया!

और मोटर बोट तेज़ी से किनारे की ओर बढ़ने लगी।

लगभग उसी वक़्त- श्रीवास्तव बाबू के घर में -
श्रीवास्तव बाबू के पास कोई फ़ोन आया था, साहब !...
...उसी के तुरंत बाद वे 'पर्ल-हार्बर' चले गए !
पर्ल-हार्बर !

ध्रुव एक पल भी नहीं रुका -
घड़. घड़ घड़. घड़. घ ड़. घ ड़.
हवा से बातें करती उसकी स्पेशल मोटरसाईकल -

सीधे 'पर्ल-हार्बर' पर ही जाकर रुकी -
कार तो श्रीवास्तव बाबू की ही लगती है !
ध्रुव !... ध्रुव !!...

ओह! डिसूज़ा साहब! मैं तो आपको ढूंढ-ढूंढ कर थक गया !
थैंक गॉड, कि तुम जिन्दा हो !
मैं तो समझ रहा था कि 'रोमन सैनिक' ने तुमको... ख़ैर छोड़ो !

मैंने अभी-अभी श्रीवास्तव के घर फ़ोन किया था! पता चला कि वह यहां आया है!
बस! मैं तुरंत यहाँ चला आया!
तो आइए! यहां पर सिर्फ़ एक 'मोटरबोट' ही दिख रही है!
शायद उसी में कुछ हो!...

परंतु मोटर-बोट में घुसते ही दोनों भौंचक्के रह गए।
ओह!
आह! ख़ान साहब!

खान साहब मर चुके हैं!
लेकिन...लेकिन यह देखो! इधर आओ, ध्रुव!

श्रीवास्तव! श्रीवास्तव रोमन हत्यारा है!! मैं तो यह सोच भी नहीं सकता था! मेरा शक तो खान पर था!
उठ,कमीने! खेल खत्म हो चुका है!
चट

नहीं, डिसूज़ा! खेल तो अब शुरू हुआ है!
म... मतलब!

मतलब अब हर चीज़ शीशे की तरह साफ़ हो चुकी है, डिसूजा साहब उर्फ़ रोमन - सैनिक!
क... क्या बक रहे हो तुम?
नाटक करना बेकार है, डिसूज़ा!

मुझको तुमपर तभी शक हो गया था जब मैंने तुम्हारे कॉटेज में वापस जाकर वे चली हुई गोलियाँ देखीं जो तुमने 'रोमन - सैनिक पर चलाई थीं!...
...वे गोलियां नकली थीं!...
...अपने को शक से बचाने के लिए तुमने रंगाशाह को रोमन हत्यारा बनाया...

...उसके बाद तुम श्रीवास्तव बाबू और खान साहब की घात में रहे! किसी प्रकार तुमको यह पता चल गया कि खान साहब ने श्रीवास्तव बाबू को यहां बुलाया है!...
...तुम यहां पहले आ धमके! खान का क़त्ल किया! और फिर...
...जब श्रीवास्तव बाबू यहां आए तो तुमने उनको किसी प्रकार बेहोश कर दिया!

अपनी पोशाक उनको पहना दी और बाहर आकर मेरा इंतज़ार करने लगे!
बस! क्या सबूत है इसका?
यह रोमन टोप!...
मैं शर्त लगाकर कह सकता हूं कि इस पर हर जगह तुम्हारी उंगलियों के निशान हैं!

जो अगर तुम निर्दोष होते तो इस 'रोमन-टोप' पर वे निशान कभी न होते!
आह!...
तड़ाक
इतने चालाक हो तो अब अपनी मौत से बच लो!

डिसूज़ा के ज़ोरदार वार से ध्रुव केबिन के अंदर आ गिरा।

डिसूज़ा ने लपक कर केबिन बाहर से बंद कर दिया।
भागने की कोशिश बेकार है, डिसूजा!

यह दरवाज़ा तोड़ने में मुझे सिर्फ़ दो मिनट लगेंगे!
कड़ाक
और तब तक मैं तुम्हारे लिए तैयार हो जाऊंगा!

दरवाज़ा टूटा, मगर तब तक देर हो चुकी थी।
?

ओह! अगर इसने मुझे पकड़ लिया तो मेरा बचना असंभव हो जाएगा!
ध्रुव बिना किसी पूर्व चेतावनी के उछला।

और उसने रोमन-सैनिक बने डिसूज़ा को बेरहमों की तरह मारना शुरू कर दिया।
तड़

- और डिसूज़ा बाहर डेक पर आ गिरा।

लेकिन डिसूजा पर इस का कोई असर नहीं पड़ा।
धाड़
उसके एक ही वार में ध्रुव नीचे आ गिरा।

अब मैं तुमको बताऊंगा कि ' रोमन हत्यारे ' से उलझने का क्या नतीजा होता है!
आह!

ध्रुव को अपनी गर्दन की हड्डियां चटकती महसूस हुई।
व..वह समुद्री चिड़िया!
?
ध्रुव के घुटते गले से एक हल्की सीटी उबली -

- और अगले ही पल उड़ती चिड़िया विद्युत गति से नीचे उतरी और -
आह!
टाक़

ध्रुव एक बार फिर आज़ाद था।
फ्रूश

ऐसा मौका दोबारा नहीं मिलेगा!
ध्रुव ने डेक पर पड़ी लोहे की मोटी चेन उठाई।

और-
मेरे ख्याल से यह चेन इसको बांधे रखने के लिए पर्याप्त होगी!

लेकिन ध्रुव को तुरंत ही पता चल गया कि उसका ख्याल ग़लत था।
कड़ाक

इस बार ध्रुव के लिए कोई मौका नहीं था।
डिसूज़ा के हाथ ध्रुव की गर्दन पर कस गए।

ध्रुव के पैर हवा में उठ गए और उसका दम घुटने लगा।
उसपर बेहोशी छाने लगी।

लेकिन बेहोशी की हालत में भी ध्रुव के हाथ उठे -

और डिसूज़ा के सर पर रखा रोमन टोप ध्रुव के हाथ में आ गया।
?

और पलभर में खेल पलट गया।
म-मेरी ताक़त कहां गई?

टोप के उतरते ही डिसूज़ा की आश्चर्यजनक शक्ति तेज़ी से ग़ायब होने लगी।
!
धाड़

और ध्रुव के...
तड़ाके
आह!

...दो ही वारों में...
धाड़

...डिसूज़ा फर्श पर बेहोश पड़ा था।
धड़ाक

खेल, वास्तव में अब ख़त्म हुआ था।

फिर बाद में–
वाह, ध्रुव! पर इस टोप को पहनने वाले में इतनी ताक़त कहां से आ जाती थी? जादू से?
जादू से नहीं, पापा! यह देखिए! इस टोप के अंदरूनी हिस्से में यह छोटी-छोटी सुईयां सी उभरी हैं!...
...और इन सुईयों पर किसी प्राचीन जड़ी-बूटी का लेप है!...

...जब इस टोप को पहना जाता है तो ये सुईयां बहुत हल्के से पहनने वाले के सिर में चुभती हैं और उनके जरिए यह रहस्य-मय जड़ी-बूटी उसके शरीर में प्रवेश कर जाती है!...
...इसी दवाई के प्रभाव से टोप पहनने वाले की ताक़त कई गुनी बढ़ जाती है!...

...इस जड़ी-बूटी को साफ़ कर देने के बाद यह रहस्यमय टोप एक साधारण टोप बनकर रह जाएगा!
और अब मैं चलता हूं!

आज से मेरी छोटी सी कमांडो-फ़ोर्स की ट्रेनिंग शुरू होने वाली है!
बेस्ट ऑफ़ लक, बेटे!
तो दोस्तो, अगले अंक तक के लिए अब विदा दीजिए! नमस्कार!

• समाप्त •